फरवरी-मार्च 2016
द्विमासिक पत्रिका
सत्यापित क्र. HAR HIN 04496/07/1/2007-T.C.

वर्ष-9 अंक-5
31 मार्च 2016

# सेवा दर्शन से प्रभु पूजा

**परामर्शदाता :** प्रान्त सेवाप्रमुख : श्री कृष्ण कुमार संघ कार्यालय, सोनीपत।
मो. 090342-83251
**स्वामी :** सेवा भारती (पंजी.), हरियाणा।
अध्यक्ष : प्रो. डॉ. बुद्ध सिंह
सी-7, अशोक विहार, फेज़ 2, गुड़गांव-122001 & 099718-02274
**सम्पादक एवं प्रकाशक :** ओम प्रकाश अत्रेजा
ई-230, अर्जुन गेट, करनाल-132001
& 0184-2255852, 2255874
**पत्रिका प्रबन्धक :**
ओम प्रकाश वर्मा, एम.ए.बी.एड.

**सेवा दर्शन से प्रभु पूजा का सम्पादन, लेखन व अन्य सब कार्य अवैतनिक हैं**

सम्पाकीय- **मैं बहुत भाग्यशाली हूँ :** मैं 12वीं कक्षा में पढ़ता था, जो 10 मई, 1957 को एक मित्र के साथ रेलगाड़ी से दिल्ली गया था। उस समय मुझे याद है दिल्ली का किराया एक रुपया लगता था। पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से हम पैदल चाँदनी चौक की ओर चल पड़े। हमने देखा शीशगंज गुरुद्वारे के सामने फव्वारा चौक पर एक मंच सजा हुआ था, देशभक्ति के गीत चल रहे थे। पूछने पर पता चला कि वीर सावरकर जी आने वाले हैं। कुछ क्षण प्रतीक्षा करने पर वीर सावरकर मंच पर पधारे, 'भारत माता की जय' के जयकारों से आकाश गूँज उठा। आज भी मेरे स्मृति पटल पर वीर सावरकर का वह अंगारों की तरह दमकता हुआ चेहरा अंकित है। 15-20 मिनट के सम्बोधन में उन्होंने कहा था स्वतन्त्रता, अहिंसा आन्दोलन से प्राप्त नहीं हुई, स्वतन्त्रता बड़े-बड़े बलिदान देकर प्राप्त की गई है। उन्होंने कहा था - कि चर्खे की रूँ-रूँ की आवाज़ से अंग्रेज़ों के कान बहरे हो रहे थे, इस डर से अंग्रेज़ हिन्दुस्तान को छोड़कर नहीं भागे। भारतीय स्वाधीनता संग्राम के सभी ज्ञात-अज्ञात योद्धाओं को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए भारत-विभाजन का स्मरण आते ही उनकी वाणी आग उगलने लगी। प्यारी सिन्धु नदी का स्मरण करके उनकी आँखों से अश्रु टपकने लगे। उस दिन उन्होंने कहा था- पाकिस्तान हमेशा-हमेशा के लिए भारत के लिए सिर-दर्द बन गया है। वह भारत की शान्ति व सुरक्षा के लिए घातक सिद्ध होगा। इस समय उनकी भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हो रही है।

'वीर सावरकर' यह शब्द साहस, वीरता, देशभक्ति का पर्यायवाची बन गया है। 'वीर सावरकर' शब्द के स्मरण मात्र से ही अनुपम त्याग, अदम्य साहस, महान-वीरता एवं उत्कट देश-भक्ति से ओत-प्रोत इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ हमारे सामने साकार होकर खुल पड़ते हैं। असाधारण व्यक्तित्व के धनी वीर

सावरकर के जीवन का एक-एक क्षण राष्ट्र-भक्ति, राष्ट्र सेवा, साहित्य सेवा, समाज-सेवा एवं हिन्दू-राष्ट्र के पुनरुत्थान के लिए संघर्ष में व्यतीत हुआ। वह हिन्दुस्तान को परतन्त्रता की बेडियों से मुक्त कराने के लिए ही इस भूतल पर 28 मई, 1883 को अवतरित हुए थे और अन्त में स्वाधीन किन्तु खण्डित हिन्दुस्तान को अखण्ड हिन्दू राष्ट्र के रूप में प्रतिष्ठित कराने का महान् स्वप्न देखते-देखते ही इस भूतल से 26 फरवरी, 1966 को विदा हो गए। अपने जीवन काल में उत्कट स्वाधीनदेश प्रेम के संघर्ष के कारण ब्रिटिश प्रताड़ना के शिकार रहे। आज़ादी के बाद तथाकथित धर्मनिरपेक्ष वादियों ने इनकी घोर उपेक्षा की। विश्व इतिहास में सर्वोत्तम क्रान्तिकारियों के सिरमौर वीर सावरकर ने ब्रिटिश साम्राज्य से देश को मुक्त करवाने के लिए अपना सर्वस्व दांव पर लगा दिया। कौन ऐसा तथाकथित धर्मनिरपेक्ष नेता है जिसने 30 वर्षों तक अंग्रेज़ी जेलों में नारकीय जीवन व्यतीत किया हो, बैल की तरह कोल्हू चलाकर प्रतिदिन 30 पौंड नारियल का तेल निकाला हो, परन्तु वीर सावरकर इसे भारत माता की परिक्रमा समझते थे। काले पानी की काल कोठरी में बन्द रहते हुए दीवार पर कोयले से कविताएं लिखते, याद करते और मिटा देते। आज़ादी के बाद नेहरू जी ने भी उन्हें कई वर्षों तक जेल में बन्द रखा। वास्तव में आज़ादी के बाद जो वर्ग सत्ता में आया, उसने उनके साथ न्याय नहीं किया। देश का हिन्दू कहीं उन्हें अपना नेता न मान बैठे इसलिए उन पर महात्मा गांधी की हत्या का झूठा आरोप लगाकर लालकिले में बंद कर दिया। बाद में न्यायालय ने उन्हें ससम्मान रिहा किया। पूर्वाग्रह से ग्रसित कांग्रेसी नेताओं ने उन्हें इतिहास में उचित स्थान नहीं दिया। वह सुभाषचन्द्र बोस तथा वीर सावरकर जैसे क्रान्तिकारियों के नाम से भी काँपता था, इसलिए चन्द्रशेखर आज़ाद, भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव जैसे क्रान्तिकारियों के नामों को इतिहास की पुस्तकों से चुन-चुन कर मिटाया गया। वीर सावरकर तो चोटी के क्रान्तिकारी, कुशल वक्ता, बेजोड़ इतिहासकार, साहित्यकार, श्रेष्ठ कवि एवं समाज सुधारक थे। उनके जोड़ का व्यक्ति हज़ारों वर्षों में कभी विरला ही पैदा होता है। उन

पर अंग्रेज़ सरकार ने कई मुकद्दमें चलाए, जिनमें उन्हें 51 वर्ष की सज़ा देने के बाद 1911 में काले-पानी भेज दिया गया। वहाँ उनके बड़े भाई पहले से ही आजीवन कारावास की सज़ा काट रहे थे। अंग्रेज़ जिन भारत माता के पुत्रों को काला पानी भेजते थे, सब जानते थे कि वहाँ से जीवित वापिस नहीं आएंगे परन्तु मौत की छाया में पला यह महापुरुष मृत्युंजय बन चुका है। उनकी पार्थिव प्रतिमा हमारे मध्य नहीं है किन्तु उनके शाश्वत विचार आज भी हमारे मार्गदर्शक हैं : "मेरे सपनों का भारत एक ऐसा लोकतन्त्रीय राज्य है, जिसके सभी मत-मतान्तरों और मज़हबों के अनुयायियों के साथ पूर्ण समानता का व्यवहार किया जायेगा। किसी को दूसरे पर आधिात्य जमाने का अवसर न रहेगा। जब तक कोई व्यक्ति हिन्दुओं को इस पुण्यभूमि तथा मातृभूमि हिन्दुस्थान को एक राज्य मानकर, इसके प्रति अपने दायित्वों का निष्ठापूर्वक पालन करेगा, तब तक उसे पूर्ण अधिकार की प्राप्ति होगी। हिन्दू, जाति-विहीन और संगठित आधुनिक राष्ट्र का रूप ग्रहण करेंगे, सभी भूमि राज्य की होगी और कोई भी जमींदार न होगा। सभी महत्त्वपूर्ण उद्योगों का राष्ट्रीयकरण होगा। भारत खाद्यान्न, वस्त्र और प्रतिरक्षा की दृष्टि से पूर्णतः आत्मनिर्भर होगा। मेरे सपनों के भारत का 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के महान् आदर्श में विश्वास होगा। सैनिक दृष्टि से सबल अखण्ड हिन्दुस्तान ही विश्व में स्थाई शान्ति और समृद्धि की दिशा में प्रभावी योगदान दे सकता है।

**हिन्दू सहिष्णु है :** "सावधान! हिन्दुओं के बारे में यह कहा जाता है कि हिन्दू बड़े सहिष्णु हैं, परन्तु हिन्दू सहिष्णु हैं और असहिष्णु भी हैं। न्याय के साथ हिन्दुओं ने सदैव सहिष्णुता का आदर किया है और अन्याय के प्रति असहिष्णुता बरती है। अतः दूसरों के धोखे में हमें नहीं आना चाहिए"।

**धर्म की परिभाषा :** हमारा धर्म महान् होने से हम धर्म को ही राष्ट्रधर्म कहते हैं, हमारा इतिहास ही धर्म है, इतना ही नहीं अपितु हमारे दैनिक व्यवहार जो इतिहास, समाज और राष्ट्र को पुष्ट करता है वही हमारा धर्म है। अमरीका का राष्ट्रपति बाईबल हाथ में लिए बिना, राष्ट्रपति पद की शपथ ग्रहण नहीं कर सकता, इंग्लैण्ड का सम्राट यदि प्रोटेस्टैंट न हो तो, उसे राज्य के पद से त्याग-पत्र देना पड़ता है। हम हिन्दू हैं और हमने दुनिया देखी है। देश, इतिहास और व्यवहार के विशुद्ध न्यायपूर्ण बर्ताव को ही धर्म कहते हैं, इसलिए धर्म में महान् शक्ति होती है। हम, हमारा देश, इतिहास और व्यवहार हिन्दुस्तान के वैभव को बढ़ाने वाला है। इस प्रकार व्यक्तिगत और सामाजिक

भावनाओं में व्याप्त प्रेरणा को ही हम धर्म कहते हैं।

**भारतभूमि दिवालिया नहीं होगी :** स्वतन्त्रता के अनेक वर्ष उपरान्त भी हम लोगों को निराश, हताश, विक्षुब्ध और नैतिकता से गिरता हुआ देख रहे हैं। आज जन-साधारण जो पेट की रोटी और अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहे हैं, बड़ी योजनाओं ने तनिक भी प्रभावित नहीं किया, किन्तु इतने पर भी एक क्षण के लिए यह सोचना कि यह तो देश खण्डित हो जाएगा, पागलपन ही होगा। हमारा देश जिसने चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, शालिवाहन और शिवा जी जैसे महान् राजनीतिज्ञों को गोदी में खिलाया है, वह कभी भी राजनीतिक दृष्टि से दिवालिया नहीं हो सकता। सहस्रों वर्षों के इतिहास में हिन्दुस्तान पर जब-जब संकट के घन लहराये, तब-तब ही किसी न किसी महापुरुष ने उसका नेतृत्व कर राष्ट्र को सम्बल दिया है। जैसा अतीत में हुआ, भविष्य में भी ऐसे लोग होते रहेंगे जो देश का निर्देशन करेंगे, इसकी सेवा के लिए जियेंगे और मरेंगे। 26 फरवरी, 1966 को उनका स्वर्गारोहण हुआ तब भारतीय संसद में कुछ सांसदों ने शोक प्रस्ताव पेश करना चाहा, तो पाखण्डी धर्मनिरपेक्ष सांसदों ने यह कहकर उसका विरोध किया कि वह इस संसद के सदस्य नहीं थे, मगर बाद में उन्हीं सांसदों ने भारत को गुलाम बनाए रखने वाले ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री चर्चिल की मौत पर इसी संसद में विधिवत् शोक प्रस्ताव पारित किया, यह कैसी विडम्बना है? सावरकर सच्चे राष्ट्रवादी विचारक थे, उनके चित्र को जब संसद के सैंट्रल हॉल में लगाने का वाजपेयी सरकार ने प्रयास किया तो उसका विरोध श्रीमती सोनिया गाँधी ने राष्ट्रपति को पत्र लिखकर किया। शर्म की बात है कि कांग्रेसी सरकार ने अण्डेमान निकोबार (काले पानी) स्थित हवाई अड्डे का नामकरण वीर सावरकर के नाम पर करने के प्रस्ताव को भी रद्द कर दिया था। आज-कल झूठे धर्मनिरपेक्ष बड़े-बड़े नेता वीर सावरकर को गद्दार साबित करने में लगे हैं। कौन देशभक्त कौन गद्दार यह फैसला राष्ट्र को करने दें, श्री अटल बिहारी बाजपेई की यह पंक्तियां याद रखें :

जो वर्षों तक लड़े जेलों में (सड़े) उनकी याद करें,
जो फांसी पर चढ़े खेल (खेल) में उनकी याद करें,
याद करें काला पानी को, अंग्रज़ों की मन मानी को,
कोल्हू में जुटे तेल पेरते, सावरकर की बलिदानी को। -संकलित

## सेवा भारती पंचकूला में गणतन्त्र दिवस

माधव समिति द्वारा 26 जनवरी-16 को बड़ी धूमधाम से आशियाना अपार्टमेंट्स, सैक्टर-20, जहाँ सेवा बस्तियों , झुग्गियों में रहनेवालों को बसाया गया है, मनाया गया। इस समारोह में सेवा भारती द्वारा पंचकूला में चलाये जा रहे बाल संस्कार केन्द्रों के बच्चों, सिलाई प्रशिक्षण केन्द्रों की महिलाओं और अध्यापिकाओं के अतिरिक्त स्थानीय लोगों ने भाग लिया। इस समारोह का शुभारम्भ श्रीमती उर्मिल गुप्ता सेवा भारती पंचकूला की वरिष्ठ उपप्रधान के करकमलों से ध्वजारोहण से हुआ। इसके साथ ही राष्ट्रगान, 'भारत माता की जय' और 'वंदे मातरम्' जयघोष हुआ। समारोह में बाल संस्कार केन्द्रों के बच्चों और सिलाई केन्द्रों की महिलाओं ने भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। सेवा भारती पंचकूला प्रधान श्री कपूर चन्द अग्रवाल एवं माधव समिति सचिव श्री एम. एन. मेहरा ने गणतन्त्र दिवस के सम्बन्ध में अपने विचार प्रस्तुत किए। सेवा भारती के माननीय सदस्य सर्वश्री जे.के. मग्गो, अशोक भाटिया, के. एस. सेठी, पी. सी. मित्तल, सुशील चोपड़ा, एम. एस. आहूजा, एस. डी. डोडे, कमल गोयल, साधु राम वर्मा तथा सेवा भारती की होम्योपैथिक डिसपैंसरी की डॉ॰ ईशा एवं डॉ॰ दीपिका ने भाग लिया। समारोह के उपरान्त सभी को लड्डू का प्रसाद वितरित किया गया, समापन शान्ति-पाठ से हुआ।

सेवा भारती पूरे देश में सेवा बस्तियों, कालोनियों एवं गाँवों में भिन्न-भिन्न सेवा कार्य चला रही है। सेवा भारती का मुख्य उद्देश्य अनुसूचित वर्ग की सेवा करना और उन्हें समाज की मुख्य धारा में समरस करना है। हमारा उद्घोष है-'समरस समाज-सबल समाज' ताकि भारत के समस्त जन आपसी सद्भाव में रहकर अपना एवं देश का विकास कर सकें। इस समय सेवा भारती तथा सहयोगी संगठनों द्वारा देश में 1,50,000 सेवा कार्य चलाये जा रहे हैं जिनमें बाल संस्कार केन्द्र, बाल आंगनवाड़ी, Vocational training centres, school coaching centres, औषधालय इत्यादि प्रमुख हैं। इस समय पंचकूला के भिन्न-भिन्न गाँवों, बस्तियों आदि में 25 सेवा केन्द्र चल रहे हैं।

सेवा भारती पंचकूला ने आशियाना अपार्टमेंट्स के लिए मुफ्त होम्योपैथिक डिस्पेंसरी भी खोली है, जो प्रतिदिन वहाँ के निवासियों एवं साथ के गाँव के वासियों को निःशुल्क सेवा उपलब्ध कराएगी। इसमें दो क्वालिफ़ाइड डॉक्टर की देख-रेख में सेवा होगी। इस समय आशियाना अपार्टमेंट्स में सेवा भारती द्वारा 2 सेवा केन्द्र पहले से ही चलाये जा रहे हैं। डिस्पेंसरी के उद्घाटन पर

सेवा भारती पंचकूला के ज़िला प्रधान सर्वश्री कपूर चन्द अग्रवाल, माधव समिति के प्रधान राममूर्ति वर्मा, सचिव एम. एन. मेहरा, जे. के. मग्गो, एन. के. नरूला, बी. के. रावल, एम. एल. आहूजा, सुशील चोपड़ा, अशोक भाटिया, गौरव गुप्ता, आर. के. बहल उपस्थित थे। इस समारोह में बाल संस्कार केन्द्रों के बच्चों एवं सिलाई व प्रशिक्षण केन्द्रों की महिलाओं द्वारा सरस्वती वन्दना, देश भक्ति के गीत भजन प्रस्तुत किये गए। समारोह में सिलाई केन्द्र, आशियाना अपार्टमेंट्स की 10 महिलाओं ने अपना प्रशिक्षण कोर्स सफ़लतापूर्वक पूर्ण किया, को प्रमाण-पत्र वितरित किये गये। श्री एन. के. नरूला समाज सेवी ने डिस्पेंसरी के लिये 11,000/- रु॰ की भेंट की, सेवा भारती उनकी आभारी है।

**-एम. एन. मेहरा,** सचिव

## सेवा भारती डबवाली की खेलकूद प्रतियोगिता

नेहरू पार्क स्थित आर.के.पी. वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में आयोजित एक दिवसीय वार्षिक प्रतियोगिताओं में रानी लक्ष्मी बाई सिलाई केंन्द्र व वीर अभिमन्यु बाल सिलाई केंद्र की अध्य ापिकाओं व छात्राओं ने सहसचिव सुदेश कुमार आर्य के नेतृत्व में बढ़चढ़ कर भाग लिया। श्रोताओं को संबोधित करते हुए श्री बिहारी लाल बांसल ने कहा कि खेल को खेल भावना से ही खेलना चाहिए। उन्होंने सभी का आभार जताते हुए कहा कि खेलों में भाग लेने से जहां समरसता बढ़ती है, वहीं ऐसी प्रतियोगिताओं में भाग लेने से शरीर स्वस्थ रहता है। सिलाई प्रशिक्षण केंद्र की छात्रा अलका सुपुत्री श्री राज कुमार तथा सपना सुपुत्री श्री राम सिंह ने द्वितीय स्थान पाया। इसके अलावा गुब्बारा युद्ध में वीर अभिमन्यु बाल संस्कार केंद्र डबवाली की अध्यापिका सुश्री सुमन सुपुत्री श्री रणजीत सिंह तथा रानी लक्ष्मी बाई सिलाई केंन्द्र की अध्यापिका श्रीमती गंगा सोनी ने क्रमशः पहला व दूसरा स्थान हासिल किया। रस्सा कूद तथा म्यूज़िकल चेयर खेल में इसी केंद्र की छात्रा सुमन पुत्री श्री बुधराम ने प्रथम स्थान पाया। सुई-धागा दौड़ में सुमन सुपुत्री श्री रणजीत ने पहला स्थान प्राप्त किया। इन प्रतियोगिताओं में सर्वश्री सोम प्रकाश चावला रोहतक, पीयूष, संजय, ध्रुव, वसुंधरा, ज्योति व निशा ने निर्णायक मंडल की भूमिका निभाई । विजेताओं को स्मृति चिन्ह देकर पुरस्कृत किया गया । इस अवसर पर संस्था के वरिष्ठ पदाधिकारी सर्वश्री खज़ान चंद गोयल, ध र्मपाल धवन, कृष्ण चंद्र भटनागर, मोहन लाल मक्कड़, बालचंद आर्य, सुदश कुमार आर्य, अमर सिंह गोदारा, सी.वी. कौशिक, शिव कुमार मितल मौजूद थे। अध यक्ष श्री राज कुमार

गर्ग, प्रांत सचिव श्री सतीश अग्रवाल व वरिठ सदस्य डॉ. राज कपूर ने विजेताओं को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

**-राजकुमार शर्मा, सचिव**

## सेवा भारती, मण्डी डबवाली का वार्षिक उत्सव

सेवा भारती द्वारा संचालित सवित्री केंद्र व रानी लक्ष्मीबाई सिलाई केंद्रों का वार्षिक उत्सव व पारितोषिक वितरण समारोह रविवार सायं बाल मंदिर सीनियर सैकेंडरी स्कूल के सभागार में आयोजित किया गया, जिसमें मुख्यातिथि जगदम्बा सैनेटरी हाऊस के श्री अशोक कुमार बांसल जैतो वाले एवं श्री परशुराम ब्राह्मण सभा के प्रधान श्री राकेश शर्मा ने माँ सरस्वती व भारत माता के चित्र के समक्ष ज्योति प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की। केंद्र की बालिकाओं ने गायत्री महामंत्र, श्रीगणेश वंदना व स्वागत गीत प्रस्तुत किये। अपने अध्यक्षीय संबोधन में राकेश शर्मा ने कहा, कि सेवा भारती द्वारा वंचित बस्तियों की बालिकाओं को संस्कार देकर स्वावलंबी बनाना तथा ऐसा मंच उपलब्ध करवाना काबिल-ए-तारीफ है। उन्होंने ऐसे सेवा कार्यों के लिए अपनी ओर से हर सम्भव सहयोग देने का आश्वासन दिया। मुख्यातिथि श्री अशोक कुमार बांसल ने भी संबोधित किया। तदोपरांत देशभक्ति से ओत-प्रोत गीत- 'दुश्मन के छक्के छुड़ा देंगे हम इंडिया वाले', ऐसा देश है मेरा, राधा-कृष्ण पर आधारित 'तेरी जमुना दा मिट्ठा-2 पानी, मईया यशोदा तेरा कन्हैया तथा हरियाणा, पंजाब एवं राजस्थान के सभ्याचार को दर्शाते हुए 'मेरा नौ डांडी का बीजना, रंगीलो म्हारा ढोलना, मोरनी बागां में' आदि गीतों पर रंगारंग कार्यक्रम पेश कर समां बाँध दिया। अध्यक्ष श्री राज कुमार गर्ग ने भी देशभक्ति का गीत सुनाया। इस अवसर पर बालिकाओं को पुरस्कृत किया गया। सेवा भारती की ओर से मुख्यातिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट किए गए। इस मौके पर गौसेवा आयोग के सदस्य श्री राम लाल बागड़ी, प्रांत सचिव सर्वश्री सतीश अग्रवाल, डॉ॰ राज कपूर, विजय कामरा, सुरेश गोयल, सुदेश आर्य, रमेश सेठी, संघ के नगर कार्यवाह संजीव गर्ग, सहनगरकार्यवाह नरेश गुप्ता, इंजीनियर अमृतपाल गर्ग, अनिता, जगपाल, प्रवीण, श्रीमती सुदर्शन गर्ग, सुशांत, अनुपम गर्ग, महिंद्र सचदेवा, फतेह सिंह आज़ाद, बलबीर लखोत्रा, सवित्री सिलाई केंद्र की अध्यापिका बिंदु, रानी लक्ष्मीबाई सिलाई केंद्र की अध्यापिका गंगा सोनी, वीर अभिमन्यु, बाल संस्कार केन्द्र की बबीता व सुमन सहित अभिभावक व कई अन्य नागरिक मौजूद थे। मंच संचालन डॉ॰ राज कपूर ने निभाया।

शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। सभी को जलपान करवाया गया। सुदेश आर्य ने मुख्यातिथियों द्वारा सेवा भारती को 11-11 हज़ार सहयोग राशि दिए जाने की घोषणा की विशिष्ठ अतिथि मदन लाल गुप्ता किन्हीं कारणों से कार्यक्रम में से चले गए, उन्होंने अपने संदेश में हर सम्भव सहायता किए जाने का आश्वासन दिया। **-राजकुमार शर्मा,** सचिव

## देश की समस्याओं का मूल कारण

हमारा देश कई समस्याओं से निरन्तर जूझ रहा है, जिसमें गरीबी, बेरोज़गारी, भारी जनसंख्या, अस्पृश्यता ग़रीब-अमीर के बीच बढ़ती खाई, मूल-भूत सुविधाओं का अभाव आदि प्रमुख हैं। देश की आज़ादी के समय हम लगभग 35 करोड़ थे और अब बढ़कर 125 करोड़ हो गये हैं, आने वाले वर्षों में हमारी आबादी 2020 तक 135 करोड़ हो जाने की सम्भावना है। देश की मूल समस्याओं का आज़ाद होने के लगभग 70 वर्ष बाद भी निवारण क्यों नहीं हो पाया है, यह एक गम्भीर एवं विचारणीय विषय है। यदि हम इस सम्बन्ध में विचार करेंगे तो मानना होगा कि देश के आज़ाद होने के उपरान्त सत्ता में आई सरकारों ने उन मूल प्राथमिकताओं की ओर ध्यान ही नहीं दिया। सर्वप्रथम सब के लिए मुफ़्त, अनिवार्य, एक समान अच्छी शिक्षा, स्वास्थ्य, रोटी, कपड़ा और मकान, राज्य की सबसे पहली प्राथमिकता होनी चाहिए थी। यदि आज़ाद होते ही बेसिक शिक्षा अनिवार्य होती, तो अन्य समस्याएँ होनी ही नहीं थी। कोई भी पढ़ा लिखा व्यक्ति, चाहे समाज के किसी भी तबके, धर्म, जाति आदि से ताल्लुक रखता हो, बड़ा परिवार नहीं चाहता। आज भी ग़रीब परिवारों से जो बच्चे पढ़ लिख गये हैं, वे छोटे परिवार के पक्षधर हैं। शिक्षा और इसके साथ-साथ विशेषकर वोकेशनल शिक्षा देशवासियों को स्वावलम्बी बनाती, वे लघु रोज़गार-धन्धों में लगते और बेरोज़गारी की समस्या न होती। देश में अपराध ीकरण, लूट-मार, महिलाओं, बच्चों पर अत्याचार, यौन शोषण आदि भी न होता अथवा बहुत कम होता। अनपढ़ता एक ऐसा अभिशाप है कि यह अपने साथ असंख्य बुराईयों को साथ लाता है। शिक्षित समाज में जनसंख्या नियंत्रण में रहती ही, अपितु स्वास्थ्य की समस्या भी कम होती, क्योंकि पढ़ा लिखा व्यक्ति अपने और अपने परिवार तथा समाज के स्वास्थ्य की ओर अधिक जागरुक होता है। मैंने कुछ समय पूर्व आदरणीय प्रधानमन्त्री जी को भी यह सुझाव ई-मेल के माध यम से दिया था कि अब जबकि वह देश के समग्र विकास (सबका साथ - सबका विकास) की ओर कार्य कर

रहे हैं, वह सबके लिए मैट्रिक तक मुफ़्त अनिवार्य एक समान अच्छी शिक्षा को प्राथमिकता दें, जिससे आने वाले वर्षों में अनपढ़ता के कारण जो समस्याएँ पैदा होती हैं, उनका स्वतः ही समाधान होगा। भारत सरकार और राज्य सरकारें यदि इस मूल-भूत सुविधाओं-अच्छी अनिवार्य शिक्षा, अच्छी स्वास्थ्य सेवाएँ, रोटी, कपड़ा और मकान देशवासियों को उपलब्ध कराने को प्राथमिकता दें तो देश, जो सोने की चिड़िया कहलाता था, को दुनिया का फिर से सरताज बनने में कोई नहीं रोक सकेगा और आने वाली सदी, भारत की सदी होगी। आईये हम इस ओर पूरी शक्ति से आगे बढ़ें। -**एम.एन. मेहरा, पंचकूला**

**हिसार में गणतंत्र दिवस :** सेवा भारती द्वारा चलाए जा रहे सिलाई केंद्र के पदाधिकारियों ने गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में सुभाष चंद्र बोस बस्ती में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में बच्चों ने देशभक्ति के गीत, नृत्य व नाटक प्रस्तुत किए। सिलाई केन्द्र के संचालक ने केंद्र की वार्षिक गतिविधियों पर प्रकाश डाला। वहीं उन्होंने बच्चों को देश के इतिहास और वर्तमान की मुख्य उपलब्धियों के बारे में जागरुक किया। उन्होंने कहा कि इस दिन हमारे देश का संविधान लागू किया गया था। इस अवसर पर सर्वश्री बृज भूषण तनेजा, बिशम्बर दयाल, कमल किशोर कमल, महेंद्र, सुरेन्द्र संदीप व देवी दयाल सहित अन्य अनेक लोग उपस्थित रहे। बृजभूषण तनेजा

**आपकी पाती –** 'सेवा दर्शन' जनवरी अंक प्राप्त हुआ, काफ़ी समय बाद एक उत्तम अंक पढ़ने को मिला, जिसमें आपने दो विषयों को एक ही अंक में समायोजित कर दिया, 1-आध्यात्मिक 2-ज्वलन्त असहिष्णुता-वर्तमान की विघटनकारी साज़िश। वास्तव में विश्व में ऐसा कोई ग्रंथ नहीं है जो स्वयं ईश्वर की वाङ्मयी मूरत हो, सिवाय "गीता" ग्रंथ के। यहाँ मैं-गीता के माध्यम से कहना चाहूँगा कि यह ग्रंथ इसलिए भी सम्पूर्ण है क्योंकि भगवान ने स्वयं इसका आश्रय लेकर संसार का पालन किया है। यों तो गीता की पुस्तक मात्र घर में रखने से ही भगवान सभी देवी देवता, मनुष्य व गृहस्थ की सब प्रकार से रक्षा करते हैं, परंतु जहाँ इसका पठन-पाठन एवं मनन होता है, वहाँ तो स्वयं प्रभु विराजमान रहते हैं। अतः यदि गीता का पूर्ण आश्रय पाना है तो इसके प्रति पूर्ण समर्पण वांछित है। पृ॰ 6 से 8 तक "श्री तारिक फतेह" के लेख का अवलोकन करें तो यह बहुत ही नायाब सोच के निष्पक्ष व्यक्ति हैं। इनकी बात अक्षरशः सत्य है। कृपया आप अपने इस अंक की प्रतियाँ उलेमा-ए-हिन्द, देवबन्द मुज़फ़्फ़र नगर (उ॰प्र॰), 'जामा मस्जिद' दिल्ली के इमाम-मौ॰ अब्दुल्ला बुखारी, श्री औवैसी M.P. हैदराबाद को भी भिजवायें, साथ ही उनसे अपील

करें कि अब वह मुग़लों, अरबीयों को अपना पूर्वज मानने के भ्रम को दूर करके अपने भारतीय पूर्वजों को ही अपना जाने, माने व निरर्थक हिन्दू विरोध से बचें। 'भारत माता' को भारतवासी होने के नाते अपना सर्वस्व मानें। माँ तो उनके मज़हब में भी सर्वोच्च स्थान रखती है, इसलिए "वन्देमातरम्" कहने व गाने में कोई मज़हबी अड़चन नहीं है। साथ ही सूर्य की रोशनी का तो उनके जीवन में भी बड़ा योगदान है तो उनको नमस्कार, प्रणाम, सलाम करने में क्या अड़चन है, क्या वह सूर्य की दिशाओं के अनुरूप नमाज़ अता नहीं करते ?

-**जे॰ सी॰ सिंघल** सिरसा

## आपात्काल की यातनाएँ सहने वाले सम्मानित

1975 से तत्कालीन इन्दिरा गांधी सरकार द्वारा देश भर में लगाए गए आपात्काल का विरोध करने का साहस दिखाने वालों को वर्तमान सरकार द्वारा शुभ्र-ज्योत्सना सम्मान का ताम्रपत्र नूँह (मेवात) में आयोजित गणतंत्र दिवस समारोह 26 जनवरी, 2016 के शुभ अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल जी की ओर से उपायुक्त श्री के॰ एम॰ पांडूरंग ने फ़िरोज़पुर झिरका के निम्न 5 व्यक्तियों को प्रदान किए।

**1. श्री विनोद बंसल :** श्री ताराचन्द बंसल (सेवा भारती फ़िरोज़पुर झिरका के संस्थापक) को मरणोपरांत उनके पुत्र समाजसेवी व पत्रकार श्री विनोद बंसल को ताम्रपत्र प्रदान किया।

**2. श्री राम अवतार गुप्ता :** अवकाश प्राप्त शिक्षक व समाजसेवी हैं।

**3. श्री कस्तूर चन्द जैन :** अनेक सामाजिक संस्थाओं में कार्य कर रहे हैं। राम लीला व नाट्य मंच के सफल कलाकार एवम् निर्देशक हैं। वर्तमान में सेवा भारती फिरोजपुर झिरका के प्रधान हैं।

**4. श्री अशोक कुमार गोयल :** श्री फूलचन्द गोयल के स्वर्गवासी होने पर उनके समाजसेवी पुत्र को सम्मान प्रदान किया।

**5. श्री नेमचन्द गर्ग :** ये कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। इनके पुत्र डॉ॰ यतीन्द्र गर्ग सेवा भारती मेवात के प्रधान हैं, सेवा भारती फ़िरोज़पुर झिरका में बतौर चिकित्सक अपनी सेवायें नियमित रूप से निःशुल्क देते हैं। उपरोक्त सभी बन्धु संघ के सक्रिय स्वयंसेवक हैं।

---

**चिन्तासम नास्ति शरीर शोषणम्। मातासम नास्ति शरीर पोषणम् ।।**

*अर्थात्- चिन्ता समान शरीर को सुखाने वाला दूसरा कुछ नहीं और माता समान शरीर का पोषण करने वाला दूसरा कोई नहीं।*

## सेवा भारती, पुनहाना

**1.** 16 दिसम्बर चेन्नई में भयानक बाढ़ ने भारी तबाही मचाई थी। ऐसे संकट की घड़ी में पुनहाना के R.S.S. के कार्यकर्ता श्री राकेश खण्ड कार्यवाह, श्री लालाराम भारद्वाज ज़ि॰ सेवा प्रमुख, सेवा भारती के श्री राजीव मंगला ज़ि॰ सचिव, श्री गोविन्द राम सोनी अध्यक्ष, श्री प्रदीप गोयल, श्री मनीष अरोड़ा ने नगर के स्कूल व कुछ धार्मिक संस्थाओं से सम्पर्क करके बाढ़ पीड़ितों की सहातार्थ 48,000 रु॰ की धनराशि एकत्रित करके चेन्नई भेजी, जिसमें सेवा भारती पुनहाना ने 11000 रु॰ का योगदान किया।

**2. माता जीजा बाई महिला धर्म मण्डल** 3 जनवरी, 2016 को पुनहाना से तिजारा (राज॰) जैन मन्दिर तक सेवा भारती कार्यालय से प्रातः 7:30 बजे बड़ी बस द्वारा फ़िरोज़पुर झिरका के प्राचीन शिव मन्दिर के दर्शन हेतू प्रस्थान किया, जिसमें रानी लक्ष्मीबाई सिलाई केन्द्र की 16 व महिला धर्म मण्डल की 20 महिलायें व वीर सावरकर बाल संस्कार केन्द्र के 20 बच्चे, सेवा भारती के 7 कार्यकर्ता शामिल रहे। शिव मन्दिर पहुँचकर सभी ने दर्शन किये व शिवलिंग पर जलाभिषेक किया। सभी ने बन्दरों को केले खिलाये। इसके बाद राजस्थान के सुप्रसिद्ध जैन मन्दिर दर्शन हेतू 11 बजे तिजारा पहुँचे, जहाँ सभी ने सहभोज किया तथा पक्षियों को दाना खिलाया, मन्दिर में भगवान महावीर के दर्शन किये और म्यूज़ियम में उनकी झाँकियाँ देखी। तिजारा से वापिस आने पर फ़िरोज़पुर की गऊशाला पहुँचे, सभी ने अपने हाथों से गऊओं को चारा, गुड़, पालक आदि खिलाया। गऊशाला के पास P.D. पब्लिक स्कूल मे ।TC कैम्प लगा हुआ था वहाँ गये, जहाँ फ़िरोज़पुर सेवा भारती के तरफ से भी सभी को अल्पाहार दिया गया। सर्वश्री सोनी जी, छिद्दा मल, मुरारी लाल गोयल, सचिन, अशोक व गिरीश बंसल आदि शामिल रहे। 6 बजे सायं बहनों के देशभक्ति गीत व भजन सुनाते हुए वापिस पुनहाना आ गये। *-गोविन्द राम सोनी*

---

एक राजा ने अपना महामंत्री तय करना था। उसने अपने मंत्रियों को अपने राज्य से सबसे कीमती वस्तुएँ लाने को कहा। कोई सोने का गहना, कोई हीरे, कोई कीमती जवाहरात लेकर लौटा। उनमें से एक केवल अपने देश की मिट्टी लेकर आया। राजा के पूछने पर वह बोला-'राजन! यह अपने देश की मिट्टी है, मेरे लिए माता समान है, यही मेरे लिए बहुमूल्य है और इसकी सेवा का अवसर मेरे लिए सर्वोच्च सौभाग्य है।' राजा ने उसी को महामंत्री नियुक्त कर दिया।

**संघर्ष :** एक बार एक आदमी को अपने बाग़ में टहलते हुए एक टहनी से लटकता हुआ तितली का कोकून दिखाई पड़ा। हर रोज़ वह उसे देखने लगा। एक दिन उसने देखा कि उस कोकून में एक छोटा सा छेद बन गया है। उस दिन वह वहीं बैठ गया और घंटों उसे देखता रहा, उसने देखा कि तितली उस खोल से बाहर निकलने की बहुत कोशिश कर रही है, पर बहुत देर तक प्रयास करने के बाद भी वह उस छेद से नहीं निकल पाई। फिर वह बिल्कुल शांत हो गई, मानो उसने हार मान ली हो। उस आदमी ने निश्चय किया कि वह उस तितली की मदद करेगा। उसने एक कैंची ली और कोकून के छेद को इतना बड़ा कर दिया कि वह तितली आसानी से बाहर निकलकर और यही हुआ, तितली बिना किसी और संघर्ष के आसानी से बाहर निकल आई और ज़मीन पर गिर पड़ी,उसका शरीर सूज गया, पंख सूखने लगे। वह आदमी तितली को यह सोचकर देखता रहा कि वह किसी भी वक्त अपने पंख फैला कर उड़ने लगेगी, पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। इसके उलट बेचारी तितली कभी उड़ नहीं पाई और एक जगह पड़े-पड़े बाकी की जिन्दगी घिसटते हुए उसे बितानी पड़ी। वह आदमी अपनी दया और जल्दबाज़ी में यह नहीं समझ पाया कि दरअसल कोकून से निकलने की प्रक्रिया को प्रकृति ने इतना कठिन इसलिए बनाया ताकि ऐसा करने से तितली के शरीर में मौजूद तरल उसके पंखों में पहुँच सके और वह छेद से बाहर निकलते ही उड़ सके। वास्तव में कभी-कभी हमारे जीवन में संघर्ष की सचमुच आवश्यकता होती है। यदि हम बिना किसी संघर्ष के सब कुछ पाने लगें, तो हम भी एक अपंग के समान हो जाएँगे। हमारे परिवार में एक बहुत ही सफ़ल समाज सेवी और प्रकृति से प्यार करने वाले चिकित्सक डॉ॰ गणेशदास अत्रेजा थे। वह कहा करते थे, कि जो सर्जन (डॉक्टर) पैसे के लालच में गर्भवती महिलाओं के समय से पूर्व पेट फाड़कर बच्चों को निकालते हैं, वह प्रभु की बनाई सृष्टि और उसके द्वारा रचाई गई प्रकृति का मज़ाक उड़ाते हैं। इन सबका समय आने पर भयानक परिणाम निकलने वाला है। बिना परिश्रम और संघर्ष के हम कभी उतने मज़बूत नहीं बन सकते जितनी हमारी क्षमता है। इसलिए जीवन में आने वाले कठिन पलों को साकारात्मक दृष्टिकोण से देखना चाहिए, वह आपको कुछ ऐसा सिखा जाएँगे जो आपकी ज़िन्दगी की उड़ान को संभव बना पाएँगे।

## धर्म का मूल

**(पिछले अंक में धर्म की सरल व्याख्या करने का प्रयत्न किया गया था)**

धर्म सफल और सार्थक जीवन का आधार है। यह सिर पर धारण करने वाली पगड़ी नहीं, जिसे घर से दुकान के लिए चले तो पहन लिया और दुकान पर जाकर उतार दिया। धर्म तो आत्मा का स्वभाव है। धर्म के मायने प्रेम, करुणा और सद्भावना है। धर्म दीवार नहीं द्वार है, लेकिन दीवर जब धर्म बन जाती है तो अन्याय और अत्याचार को खुलकर देखने का अवसर मिल जाता है। धर्म का केन्द्र बिंदू है-मानवीय एकता और आध्यात्मिकता, जो हर व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति के साथ समाज को सर्वांगीण उन्नति की पृष्ठभूमि प्रदान करे। मनुष्य जिस आदर्श समाज के लिए तरस रहा है, वह मनुष्य-स्वभाव को अध्यात्म की दिशा में मोड़े बिना संभव नहीं है। अध्यात्म की भूमिका में ही सत्य, न्याय, क्षमा, आत्मसंयम, संवेदनशीलता और स्वार्थ त्याग जैसे जीवन मूल्य पनपते हैं। धर्म का अर्थ है वैज्ञानिक आधार पर जीवन और जगत के सूक्ष्म रहस्यों को समझना, पूर्ण पुरुषों, ज्ञानीजनों और शास्त्रों द्वारा निर्धारित नियमों का पालन करना। देश का अच्छा नागरिक वह है जो शासन को समझता है और शासन के नियमों का पालन करता है। जो अच्छा नागरिक बनता है वह सहज ही धार्मिक बन जाता है। व्यक्तिगत विकास, परिवार की सुसंस्कारिता और अच्छे समाज की संरचना ये सब धर्म के ही मधुर फल हैं। धर्म के मौलिक तत्व एक जैसे होते हुए भी धर्म की ज़मीन में कुछ ऐसे कीटाणु लग गए हैं जो समाज में विषवृक्ष उत्पन्न कर रहे हैं। इस दृष्टि से कभी-कभी पूजा-स्थलों, धार्मिक पहचान के चिन्हों और पंडा-पुजारियों की भूमिका भी विवादास्पद बन जाती है। संवादहीनता, संवेदनशीलता की कमी, भय, असुरक्षा की भावना, पहचान का संकट-इन कारणों से भी विभिन्न धर्म- समुदाय परस्पर संघर्ष में उतर जाते हैं। यह दोष धर्म के मूल तत्वों का नहीं, बल्कि संगठित धर्मों का विवादास्पद भूमिका से संबंधित है। वस्तुतः एक साथ बैठकर परमात्मा का स्मरण, तत्व-चिंतन, आत्म-निरीक्षण, कल्याणकारी योजनाओं का निर्धारण-क्रियान्वयन आदि कारणों-प्रयोजनों से धर्म स्थल बने, पर मज़हबी कट्टरता और धार्मिक असहिष्णुता के कारण वे विवादों का केंद्र बन चुके हैं।

-***ललित गर्ग***

## सेवा भारती, अम्बाला

साहा खंड के तेपला ग्राम में बाल संस्कार एवं निःशुल्क कोचिंग केन्द्र का शुभारंभ वर्ष 2016 के पहले दिन किया गया। इस प्रकल्प को चलाने हेतु बुनियादी ज़रूरतों की व्यवस्था सेवा भारती से जुड़े हुए स्थानीय व ज़िला स्तर के कार्यकर्त्ताओं ने की। ज़िला अध्यक्ष सर्वश्री सतीश जी परूथी, वरिष्ठ कार्यकर्त्ता कर्नल (से. नि.) सतनाम सिंह, गाँधी जी, नरेन्द्र कुमार एवं अन्य ग्रामीण माताओं-बहनों की उपस्थिति में कार्यक्रम का शुभारंभ ग्रामीण महिलाओं द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। श्री सतीश परूथी ने सेवा भारती हरियाणा का संक्षिप्त परिचय दिया। ज़िला में चल रहे सेवा के विभिन्न प्रकल्पों की जानकारी दी। श्री सतनाम जी ने उपस्थित बच्चों को आशीर्वाद देते हुए सेवा के महत्त्व से अवगत कराया। अंत में प्रशाद के वितरण के साथ प्रकल्प की नवनियुक्त अध्यापिका बहन सुरेखा ने जलपान कराया।

**1.** कुरुक्षेत्र में सेवा भारती का अच्छा प्रभावी कार्य है। पिछड़ी जाति से एक मेधवी छात्रा सेवा भारती के सम्पर्क में आई और कुछ समय में ही वह सेवा भारती कुरुक्षेत्र का बाल संस्कार केन्द्र चलाने लगी। जहाँ वह बाल संस्कार केन्द्र का संचालन करती थी, वहाँ उसने लगातार मेहनत करके संगीत में एम. ए. में विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया और देश की पहली महिला राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल के हाथों से स्वर्ण पदक प्राप्त किया। इस समय वह लड़की एम. ए.जैन कॉलेज अम्बाला में प्राध्यापिका है।

**2.** भिवानी ज़िला के चरखी दादरी के श्रीनिवास जी हड़ौदिया सेवा भारती की देखरेख में नशा-मुक्ति आन्दोलन पिछले 20 वर्षों से चला रहे हैं, उन्होंने सैंकड़ों लोगों को नशे से मुक्ति दिलाई है। विशेष रूप से वह यह कार्य गाँवों में करते हैं। वहाँ जाकर पहले हवन-यज्ञ करते हैं और बाद में लोगों को विशेष रूप से जवानों को नशा छोड़ने की शपथ दिलाते हैं।

**3.** **2004** से **2012** तक स्व. श्री सुरेन्द्रनाथ जी भाटिया ने खूब परिश्रम करके सेवा भारती के कार्यों को बढ़ाया। सोनीपत में इस समय एक पूर्णकालिक स्वामी अमृतानन्द जी संघ कार्यालय में रहते हैं। वह सोनीपत ज़िले में प्रवास करके सेवा भारती कार्यों का विस्तार कर रहे हैं।

**4.** पंचकूला में ग़रीब परिवार में एक नौजवान बीमार पड़ गया। परिवार वालों ने उसे एक चौराहे पर फैंक दिया। वहाँ सेवा भारती के कार्यकर्त्ता श्री राम स्वरुप जी वर्मा ने उसे देख लिया, उसे उठाकर हस्पताल में ले गए, कई महीने तक उसका इलाज चलता रहा, ठीक होने के बाद उसने कार चलाना सीखा। इस समय वह कार ड्राईवर है।

**-नरेश कुमार, प्रान्त सचिव**

## रोहतक में–मकर सक्रान्ति उत्सव

14.1.2016 को मकर संक्रान्ति उत्सव 'सेवा भारती कार्यालय' महावीर कालोनी में सायं 3 बजे से 5 बजे तक मनाया गया। इसमें नगर के सभी 4 बाल संस्कार केन्द्रों व 3 सिलाई प्रशिक्षण केन्द्रों के सभी भईया, बहिनों, अध्यापिकाओं तथा नगर कार्यकर्त्ताओं सहित भाग लिया। इस अवसर पर प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रत्येक केन्द्र से 2 प्रतिभागियों ने भाग लिया। अलग-2 विध ाओं-गीत, भजन, दोहे, चौपाई, नृत्य इत्यादि का प्रदर्शन किया गया। प्रथम स्थान कु॰ सुमन सिलाई केन्द्र महावीर कालोनी, द्वितीय स्थान कु॰ पूजा सिलाई केन्द्र पहाड़ां मोहल्ला को श्री कश्मीरी लाल जी प्रान्त प्रचारक प्रमुख, रा॰ स्व॰ सं॰ हरियाणा ने पुरस्कृत किया। दूसरा प्रमुख कार्यक्रम 'प्रश्न मंच' रहा। सभी बच्चों को दो दलों में विभक्त कर विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछे गए, जिससे जहाँ उनके ज्ञान में वृद्धि हुई, वहाँ मनोरंजन भी खूब हुआ। नगर सचिव श्री हीरा सिंह यादव ने मकर सक्रान्ति के सम्बन्ध में अपने उद्‌बोधन में विस्तृत जानकारी दी। तत्पश्चात् श्रीमान् कश्मीरी लाल जी ने अपने आशीर्वचन में कार्यक्रम की सराहना करते हुए आगे भी ऐसे कार्यक्रमों द्वारा प्रतिभा विकास एवं सेवाभाव जगाने का कार्य करते रहने की बात की। अन्त में नगर अध्यक्ष प्रो॰ नेत राम गर्ग ने इस उत्सव को सफल बनाने के लिए सभी का धन्यवाद किया। इस कार्यक्रम का संचालन नगर सहसचिव श्री राजेन्द्र प्रसाद जुनेजा द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में सभी अध्यापिकाओं सर्वसुश्री प्रोमिला रानी, हर्षलता, रेणु लता, निर्मला देवी, भारती भाटिया, सीमा रानी व कु॰ संगीता ने भाग लिया। ज़िला अध्यक्ष सर्वश्री ओमप्रकाश अरोड़ा, नगर उपाध्यक्ष राधेश्याम गर्ग, कृष्ण लाल बत्रा सहकोषाध्यक्ष, सेवक राम सहसचिव, शादी लाल ज़िला सेवा प्रमुख, नारायण आसरा उपस्थित थे। अन्त में रेवड़ी मूंगफली का प्रसाद वितरित किया गया। पुरस्कार की व्यवस्था श्री हीरा सिंह यादव व प्रसाद की व्यवस्था श्री राजेन्द्र भाटिया नगर प्रचार प्रमुख ने की।

**बसंत पंचमी पर खेल–कूद प्रतियोगिता :** 12 फरवरी को सेवा भारती रोहतक द्वारा संघ कार्यालय में 'खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन प्रातः 10 बजे से 2 बजे तक रहा। सिलाई केन्द्र की बहिनों एवं बाल संस्कार केन्द्रों के बच्चों की अलग-2 प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। बहिनों की प्रतियोगिताओं में 'चम्मच दौड़', 'सुई धागा दौड़', 'बोरी दौड़', 'रस्सी कूद

प्रतियोगिता' एवं 'रस्सी दौड़' हुए। बच्चों की प्रतियोगिताओं में 'सामान्य दौड़', 'मेंढक दौड़', 'घुड़सवार दौड़', 'गणित दौड़', 'गुब्बारा युद्ध', 'टॉफ़ी दौड़', 'तीन टाँग की दौड़', आदि की प्रतियोगिता हुई। इस में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वालों को पुरस्कृत किया गया। शेष सभी प्रतिभागियों को भी सांत्वना पुरस्कार दिये गये। इसके उपरान्त मा॰ कश्मीरी लाल जी प्रान्त प्रचारक प्रमुख ने अपने उद्‌बोधन में बसंत पंचमी के महत्त्व को बताते हुए कहा - हमें देश व धर्म की रक्षा हेतु बालक वीर हकीकत की तरह अपना सिर कटाने में पीछे नहीं हटना चाहिए तथा समाज व राष्ट्र की सेवा में सदैव तत्पर रहना चाहिए। इस कार्यक्रम में कार्यकर्त्ताओं के अतिरिक्त विशेष रूप से बहिन संतोष आहूजा व अंजली जैन का सहयोग रहा। कार्यक्रम के पश्चात् सभी ने सहभोज का आनन्द लिया।

**-ओमप्रकाश अरोड़ा,** ज़िला अध्यक्ष

## सेवा भारती – फरीदाबाद

**केशव समिति** आर्यनगर : सेवा भारती के द्वारा चलाये जा रहे सिलाई प्रशिक्षण केन्द्रों में 25 जनवरी 2016 को प्रान्त सिलाई प्रमुख श्री बिशन दयाल जी ने दो केन्द्रों सूर्य विहार एवं विनय नगर की बहिनों के पेपर कराये। जिसमें 27 बहिनों ने भाग लिया। वहाँ के अध्यक्ष श्री एम. वी. प्रसाद एवं केन्द्र प्रमुख डॉ॰ मधुसूदन बाला, श्री ओम प्रकाश कुशवाहा, मोहन शास्त्री और ज़िला केन्द्र प्रमुख भुवनेश शर्मा जी के नेतृत्व में परीक्षाएँ सम्पन्न हुई।

**माधव समिति** में चलाए जा रहे सिलाई केन्द्रों की परीक्षाएँ 26.1.2016 को हुई। मा॰ बिशन दयाल जी ने ही प्रातः से लेकर सायं 5 बजे तक परीक्षा शिव मन्दिर में सम्पन्न करायी। उसमें 53 बहिनों ने भाग लिया, जिसमें 5 सिलाई केन्द्रों की परीक्षा हुई। उसमें श्रीमान् सुरेन्द्र कटारिया अध्यक्ष माधव समिति, मोहन शास्त्री, भुवनेश शर्मा की उपस्थिति में पेपर सम्पन्न हुए। बीच में भोजन भी कराया गया। इस प्रकार 7 केन्द्रों की कुल संख्या 80 बहिनों की रही।

**प्रमाण-पत्र वितरण :** सूर्य विहार की 20 बहिनों को प्रमाण-पत्र 6 माह कोर्स 2015 में जिनका पूरा हुआ और जो बहिनें उत्तीर्ण हुई उनको मा॰ शिव कुमार कटारिया, श्री एम. वी. प्रसाद तथा डॉ॰ मधुसूदन बाला की देखरेख में प्रमाण पत्र वितरण करवाए। उसमें सूर्य विहार की आचार्या श्रीमती संगीता शर्मा ने बहिनों को सिखाने व संस्कार देने में बहुत ही बढ़-चढ़कर भाग लिया। बाद में प्रसाद वितरण एवं शान्ति-पाठ द्वारा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

**मकर सक्रान्ति उत्सव :** फरीदाबाद महानगर में 14 बस्तियों में बड़े ही धूमधाम से 13.1.2016 एवं 14.1.2016 दो दिनों में मनाया गया। इसमें सभी कार्यकर्त्ताओं एवं आचार्याओं तथा बस्ती के प्रमुख लोगों ने हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम में सिलाई केन्द्र की बहिनें तथा बाल संस्कार के बच्चों ने इकट्ठे होकर बस्ती में सक्रान्ति उत्सव मनाया।

1. ग्राम नवादा में श्री जगवीर सिंह एवं परमिन्दर जी सेवा प्रमुख तथा श्री विजेन्द्र सिंह खण्ड कार्यवाह ने हिस्सा लिया।
2. काली मन्दिर पहाड़ी पर श्री सुरेन्द्र वशिष्ठ ज़िला सहशारीरिक प्रमुख, डॉ॰ सूरजभान एवं श्रीमती रेणु शर्मा ने भाग लिया।
3. हंस कालोनी वाल्मीक बस्ती में श्री सुरेन्द्र कटारिया अध्यक्ष माधव समिति श्री राजकुमार मदान ने कार्यक्रम करवाया।
4. जोगियों वाला मन्दिर 3 नं. पुलिया को श्री रामचेत जी नगर नगम से सेवा निवृत्त पालक एवं श्री पुष्कर भारद्वाज ने कार्यक्रम में हिस्सा लिया।
5. ए॰ सी॰ नगर संघ कार्यालय में श्री रमेश अग्रवाल एवं श्री राजकुमार जी सेवा प्रमुख ने भाग लिया। श्रीमती राधा ने प्रसाद वितरण किया।
6. शिव मन्दिर में डॉ॰ अश्वनी गौड़ तथा मोहन शास्त्री ने भाग लिया।
7. कबीर गीता मन्दिर में श्री राजकुमार जिन्दल, श्री राम एवं भुवनेश शर्मा ने भाग लिया।
8. ईस्ट इण्डिया कालोनी 22 सैक्टर में श्री अमरनाथ उपाध्यक्ष माधव समिति तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शीला शर्मो ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।
9. सूर्यविहार में श्री एम॰ वी॰ प्रसाद तथा ओमप्रकाश कुशवाह ने भाग लिया।
10. विनय विहार में डॉ॰ मधुसूदन जी ने कार्यक्रम करवाया।
11. सन्त नगर में मा॰ शिव कुमार ज़िला अध्यक्ष, ओमप्रकाश वधवा तथा श्री विनोद जी भाग कार्यवाह ने उत्सव किया।
12. सै॰ 3 में श्री पी॰ सिंह, श्री चतुर्वेदी व श्रीमती रानी शर्मा ने भाग लिया।
13. वल्लभगढ़ में श्रीमती उर्मिला जी तथा भुवनेश जी ने भाग लिया।
14. सै॰ 55 ग्राम गौधी सरदार वल्लभ भाई पटेल स्कूल में श्रीमती सुषमा, श्रीमती सत्यवती तथा पटेल जी ने कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर भाग लिया।

इस प्रकार से सभी 14 बस्तियों में मकर सक्रान्ति के उत्सव हुए।

**बाल संस्कार केन्द्र का उद्घाटन** फरीदाबाद ओल्ड चौक पर सन्त नगर बस्ती में किया गया। इस अवसर पर सागर पब्लिक स्कूल के प्राचार्य सर्वश्री राजेश

यादव, मोहन शास्त्री, भुवनेश जी, वहाँ की आचार्या, बस्ती के विनोद जी भी उपस्थित रहे। बच्चों ने कविता, गीत, प्रार्थना गाकर सुनाए में प्रसाद वितरण एवं शान्ति-पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

**24.1.2016,** काली मन्दिर पहाड़ी के ऊपर एक संस्कार केन्द्र में डॉ॰ श्री जी॰ एल॰ बंसल एवं उनके डॉ॰ बेटे ने 25 बच्चियों को 5-5 कॉपी, पेन्सिल, रबड़, शार्पनर बाँटे। वहाँ पर बच्चों ने गीत कविता गायत्री-मंत्र, शान्ति-पाठ भीं सुनाए। कार्यक्रम में बस्ती प्रमुख श्री रघुबीर जी, मोहन जी, भुवनेश जी एवं बस्ती के अनेकों कार्यकर्त्ता उपस्थित रहे। प्रसाद वितरण एवं शान्ति-पाठ के बाद कार्यक्रम का समापन हुआ। **-मोहन शास्त्री**

## सेवा भारती टोहाना

इन्दिरा बस्ती सिलाई केन्द्र में 40 कन्याओं के पूजन का आयोजन किया गया। कन्याओं को भोजन, देवी माँ का प्रसाद तथा एक-एक थाली दक्षिणा में भेंट की गई, 30 अन्य भाई-बहनों भी ने सहभोज में भाग लिया। श्री भीम सिंह वर्मा तथा उनकी धर्मपत्नी यजमान बने। इस आयोजन में सर्वश्री हंसराज नागपाल, राय चन्द जैन, मनफूल शर्मा, प्रेम प्रकाश शास्त्री, सत प्रकाश शर्मा, धर्मपाल शास्त्री, के. एल. रेहलन, दया नन्द वर्मा तथा सर्वमित्र नरूला उपस्थित रहे। यह कार्यक्रम, मा॰ श्री जगन्नाथ बांसल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। बस्ती में भाई-बहनों में अपार उत्साह था। प्रेमनगर सिलाई केन्द्र में 6 मास पूर्व के नवरात्रों में इस प्रकल्प में भी इसी रूप में कन्या-पूजन का कार्यक्रम आयोजित किया गया था।

-**राय चन्द जैन**, सचिव

## बुद्धिमति भरे उतर

**गाँव व नगर :** पाँचवीं कक्षा में एक अध्यापक ने बच्चों से एक प्रश्न पूछा- बच्चो! यह बताओ, कि गाँव व नगर में क्या अन्तर है? एक बालक ने बड़े भोले अन्दाज़ में बड़ा सुन्दर उत्तर दिया। मास्टर जी! केवल इतना अन्तर है, कि गाँव में कुत्ते आवारा घूमते हैं और गौ माता को पाला जाता है। परन्तु नगर में कुत्ते पाले जाते हैं और गौ माता आवारा घूमती है।

**आश्रम :** अनाथ आश्रम में ग़रीब अनाथ बच्चे रहते हैं और वृद्ध आश्रम में बाल-बच्चेदार अमीर बुज़ुर्ग मिलते हैं। ब्रिटेन में विधिवत् पहला स्कूल सन् 1828 में खुला, जबकि उस समय अंग्रेज़ों के ही अनुसार भारत में 95% साक्षरता थी। भारत में उस समय लाखों पाठशालाएँ और गुरुकुल थे। भारत में लाखों वर्ष पूर्व से ही आर्यवर्त में गुरुकुल परम्परा थी, जिसमें विश्व भर से लोग शिक्षा ग्रहण करने आते थे। **संकलित -ओमप्रकाश वर्मा**

## आज के दधीचि को श्रद्धांजलि

भारतीय समाज में दान में समय और श्रम का बहुत महत्त्व है। प्राचीन काल में दधीचि ने अपना मेरुदण्ड दान करके ब्रह्मशस्त्र बनाकर असुरों का संहार किया था। इसी महान परम्परा को आगे बढ़ाते हुए यमुनानगर के दधीचि श्री कृष्ण गोपाल दत्ता ने 4 साल पूर्व अपनी देह को दान करने का निर्णय लिया, जिसे कार्यान्वित करते हुए दत्ता परिवार ने उनकी मृत्यु के पश्चात् उनकी पार्थिव देह बहन श्रीमती प्रवीण लता भाटिया और श्री जे॰ के॰ धमीजा के सहयोग से P.G.I. चण्डीगढ़ में दान करा दी। श्री कृष्ण गोपाल दत्ता जी का जन्म 2.4.1932 को श्री रघुनाथ दत्ता तथा माता सुमिता दत्ता ज़िला रावलपिण्डी में हुआ था। विभाजन के पश्चात् दत्ता परिवार रादौर ज़ि॰यमुना नगर में आकर बस गया। आप की शिक्षा शाहबाद मारकण्डा में हुई। वहीं आप संघ के सम्पर्क में आए। जीवन पर्यन्त इसी विचारधारा से जुड़े रहे। संघ की विभिन्न ज़िम्मेदारियों को निभाते हुए अन्त में सेवा प्रकल्पों के माध्यम से सेवा भारती से जुड़े। 2003 में रादौर से यमुनानगर में आकर आपने सेवा भारती को अपना पूरा समय देकर समाज सेवियों की पूरी टीम तैयार की जो सुबह हर-रोज़ सरकारी हस्पताल में मरीज़ों को दूध-चाय तथा फल वितरित करते हैं। यह सेवा 15 सालों से चल रही है। इस के अतिरिक्त आपने रक्तदान और नेत्रदान के लिए भी लोगों को प्रेरित किया। अपनी पत्नी के देहान्त पर उनके भी नेत्र दान किये। इनके प्रयत्नों से एक पूरे ग्राम ने नेत्रदान को अपनाया है। देहदान करके आपने समाज को एक नई दिशा दी। आप अपने पीछे पुत्र-पवन कुमार दत्ता, पुत्रवधु स्नेह दत्ता, पौत्र गुलमहक दत्ता और कुबेर दत्ता को छोड़ गए हैं। सभी संघ से जुड़े हुए हैं, इन्होंने संकल्प लिया है कि देहदान की इस परम्परा को सारा परिवार अपनाएगा, वे समाज सेवा की इस धारा को चालू रखेंगे। दत्त परिवार ने चौथे की रस्म को सरकारी अस्पताल में पौदा रोपण करके एक नई परम्परा चालू की है। सेवा भारती परिवार एवं समाज उनको अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। सेवा भारती यमुनानगर देहदान जैसे महान कार्य के लिए संकल्प-पत्र भरवाना, इस विषय पर समाज को जागरुक करना और मरणोपरांत देहदान करवाना, बहिन प्रवीण लता भाटिया के प्रयासों से इस ओर कदम बढ़ाये जा रहे हैं। **-प्रवीनलता भाटिया**

## पानीपत ने लोहड़ी पर्व मनाया

13 जनवरी 2016 को सेवा भारती कार्यालय में लोहड़ी पर्व मनाया गया। इस में गऊशाला, शास्त्री कालोनी, बालवाड़ी व ज्ञान दीप के बच्चों व अध्यापिकाओं ने भाग लिया। बच्चों ने लोहड़ी पर 'पंजाबी गीत, माँ मुझको बन्दूक दिला दे, ऐसा वीर बना दे माँ, बेटी कोख से बोल रही' गाए। जम्मु के शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई। श्री दिवान चन्द चावला ने ध्रुव भक्त, शिवा जी की कहानी सुनाई। श्री ओम प्रकाश आर्य ने लोहड़ी पर्व के बारे बताया कि यह ऋतु परिवर्तन का पर्व है। ऋषि मुनि कन्दराओं व गुफ़ाओं में तपस्या व प्रभु भक्ति करने जाते थे। सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है। श्री अनिल मित्तल ने सन्देश दिया, कि ऐसे पर्व करते रहना चाहिए, इनसे बच्चों को अच्छे संस्कार मिलते हैं। इस पर्व पर बच्चों के माता-पिता, संत लाल मोंगा, जगदीश बजाज विशेष रूप में उपस्थित थे।

**दुनिया बनाने वाले महिमा तेरी निराली।**

चंदा बनाया शीतल, सूरज में आग डाली, दुनिया बनाने वाले .....

1. ऊँचे शिखर गिरि के, आकाश छू रहे हैं।
वृक्षों के झुरमुटे भी, वायु में झूम रहे हैं।
सरिताएँ करती कल-कल निर्मल से नीर वाली, दुनिया बनाने वाले.....

2. फूलों का चूसकर रस कैसे मधु बनाये,
मधुमक्खी में ही तूने क्या यंत्र हैं लगाये।
मधु सबके मनको भाई फूलों पे आई लाली, दुनिया बनाने वाले.....

3. पत्तों को खा के कीड़ा रेशम बना रहा है,
है कौन जो उदर में चरखा चला रहा है।
बुन-बुन के आ रहा है रेशम का लच्छा जाली, दुनिया बनाने वाले ....

4. बरसात के दिनों में लैंटर टपकते देखा,
बहिए के घोंसले में पाई न जल की रेखा।
तूने सिखाई ऐसी ये तकनीक है निराली, दुनिया बनाने वाले.....

5. जुगनू की दुम में तूने क्या बल्ब है लगाया,
बरसात की निशा में जंगल है जगमगाया।
पक्षी चकोर के क्या आँखों में कशिश डाली, दुनिया बनाने वाले .....

6. मोरों के पंख देखो क्या विचित्र चित्रकारी,
कोयल बनाई काली आवाज़ प्यारी-प्यारी।

बिजली की चमक कैसी घन की घटा है काली, दुनिया बनाने वाले

7. बच्चे किसी के दर्जन रोटी के भी हैं लाले,
संतान बिन किसी के घर में लगे हैं ताले।
मानव के कर्मफल की तेरे हाथ में है ताली, दुनिया बनाने वाले .....

8. माता-पिता विधाता बन्धु सखा व भ्राता,
पथिक तेरी महिमा का न भेद किसी को पाता।
तेरे दर पे आए दाता ले करके झोली खाली, दुनिया बनाने वाले .....

-**ओम प्रकाश आर्य,** ज़िला सचिव, पानीपत

## भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा स्वामी विवेकानन्द जयन्ती पर आयोजित निःशुल्क विकलांग सेवा शिविर – 2016

स्वामी विवेकानन्द की जयन्ती के अवसर पर भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार तथा एलिम्को (कानपुर) के सहयोग से 12 जनवरी, 2016 को माधव सभागार, निरालानगर में **निःशुल्क विकलांग सेवा शिविर** का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहसरकार्यवाह माननीय डॉ॰ कृष्ण गोपाल जी ने कहा कि, "जब तक निशक्त और विकलांग जन सबल नहीं हो जाते तब तक भारत महान नहीं बन सकता। पूरे देश की ज़िम्मेदारी है कि ऐसे बन्धुओं को सहारा देने का काम करें। उन्होंने सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय की तारीफ़ करते हुए कहा कि यह मंत्रालय प्रशंसनीय कार्य कर रहा है लेकिन जितनी आवश्यकता है उतना सरकार नहीं कर पा रही, इसलिए समाज के बन्धुओं को इस कार्य में सहयोग के लिए आगे आना चाहिए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सामाजिक न्याय मंत्री माननीय थावरचन्द गहलोत ने कहा कि विकलांग जन जो शारीरिक व मानसिक रूप से कमज़ोर हैं, लोगों की समस्याओं के समाधान हेतु भारत सरकार स्वयं उनके पास जा रही है और इस तरह के शिविरों के माध्यम से उनके विकास के कार्यक्रम चला रही है। कार्यक्रम के अध्यक्षत उत्तर प्रदेश के महामहिम राज्यपाल श्री राम नाईक ने कहा कि स्वामी विवेकानन्द ने समाज की विकलांगता दूर करने तथा खोए हुए स्वाभिमान को लौटाने का काम किया था। आज भाऊराव देवरस सेवा न्यास विकलांग जनों को उपकरण वितरित कर रहा है। 510 निःशक्त जनों को 51 लाख 84 हज़ार के 356 ट्राईसाइकिल, 49 व्हील चेयर, 308 वैशाखी, 14 अत्याधुनिक छड़ी, 09 दृष्टिबाधित छड़ी, 1 ब्रेल स्लेट, 65 श्रवण मशीन और

32 कृत्रिम अंगों का वितरण किया गया।

चेतना संस्था अलीगंज और स्पर्श कन्या विद्यालय मोहान रोड के मूक बधिर बच्चों द्वारा प्रस्तुत किए गए रंगारंग कार्यक्रम को देखकर केन्द्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री श्री थावरचन्द गहलोत दोनों संस्थाओं के बच्चों को पाँच-पाँच हज़ार रुपये नकद ईनाम दिये। जब केन्द्रीय मंत्री ने विकलांगों के लिए समेकित पुनर्वास केन्द्र के लिए दस एकड़ जमीन की आवश्यकता की बात कही तभी पूर्व डिप्टी एस. पी. श्री अविनाश पाण्डेय और व्यापारी श्री राजेश अग्रवाल ने विकलांग जनों के लिए समेकित पुनर्वास केन्द्र की स्थापना के लिए दस एकड़ भूमि दान में देने की घोषणा की।

कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य वक्ता डॉ॰ कृष्ण गोपाल, विशिष्ट अतिथि श्री थावरचन्द गहलोत, कार्यक्रम अध्यक्ष श्री राम नाईक माननीय राज्यपाल उत्तर प्रदेश, लखनऊ के महापौर डॉ॰ दिनेश शर्मा, मोहनलालगंज क्षेत्र के सांसद मा॰ कौशल किशोर, भारत सरकार के गृहमंत्री तथा लखनऊ के सांसद मा॰ राजनाथ सिंह के प्रतिनिधि स्वरूप श्री दिवाकर त्रिपाठी ने स्वामी विवेकानन्द एवं भाऊराव देवरस के चित्रों के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलन कर किया। कार्यक्रम में स्वागत, एलिम्को-परिचय एवं भूमिका भारत सरकार के संयुक्त प्रमुख सचिव श्री अवनीन्द्र अवस्थी ने प्रस्तुत की। न्यास का परिचय भाऊराव देवरस सेवा न्यास के सहसचिव राहुल सिंह जी ने दिया। कार्यक्रम का संचालन श्री राजेश ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ॰ विनय मिश्र ने किया। **-सेवा संवाद लखनऊ**

## सेवा भारती यमुनानगर

13-14 जनवरी 2016 को लोहड़ी व मकर संक्रन्ति पर्व बाल संस्कार केंद्र पुराना हमीदा, में मनाया गया। श्री घनश्याम दास जिंदल ने बच्चों व अध्यापिकाओं को मूंगफली, रेवड़ी, गज्जक व फुल्ले का प्रसाद बांटा। श्रीमती सुनीता त्यागी ने लोहड़ी व मकर संक्रन्ति का महत्व बताया। बच्चों ने देशभक्ति के गीत प्रस्तुत किए । इस अवसर पर सर्वश्री योगध्यान थरेजा, नन्द लाल शर्मा, नवीन गौतम प्रचार प्रमुख शमिल हुए। 12-2-2016 को बसंत पँचमी का पर्व बाल संस्कार केंद्र ग्राम गघौली व मुण्डा माजरा में मनाया गया। कार्यक्रम को भारत माता के चित्र पर फूल चढ़ाकर व दीप प्रज्ज्वलित करके किया, बच्चों ने गीत व भजन गाये । श्रीमती सुनीता त्यागी ने सरस्वती वंदना के बारे में बताया। इस अवसर पर सर्वश्री बाई जी. नन्द लाल शर्मा, महेश नांगिया व गाँवों के गणमान्य व्यक्ति शमिल हुए। **-नवीन गौतम, प्रचार प्रमुख**

## निष्काम सेवा से होते हैं चमत्कार

आमतौर पर इंग्लैंड में पिकनिक स्पॉट झीलों और तालाबों के किनारे पर हैं। सच्ची घटना है। इंग्लैण्ड का एक धनी परिवार पिकनिक मनाने गया। उनका बच्चा खेलते-खेलते तालाब में गिर गया। चीख-पुकार सुनकर वहाँ के माली ने छलांग लगा दी और बच्चे को बचा लिया।

परिवार कृतज्ञ भाव से माली को कुछ देना चाहता था, माली ने हिचकिचाते हुए बतलाया कि उसका बेटा डॉक्टर बनना चाहता है, पर धनाभाव में यह सम्भव नहीं है। समर्थ परिवार ने डॉक्टर बनने तक बच्चे को आर्थिक सहायता देने की हामी भर दी, जिसे पानी में डूबने से बचाया गया वह बच्चा आगे चलकर इंग्लैड का प्रधानमंत्री बना, नाम था- दूसरे विश्व युद्ध का हीरो 'विंस्टन चर्चिल'। चर्चिल एक बार बीमार पड़ गया, देश के सबसे अच्छे डॉक्टर को बुलवाया गया। चर्चिल जल्द ही रोगमुक्त हो गये। डॉक्टर था- 'पैंसिलिन का आविष्कारक अलैक्ज़ेण्डर फ्लेमिंग-उसी माली का बेटा'। इस प्रकार सेवा के कार्य दूसरों को प्रसन्नता देते हैं, करने वालों के लिए आत्म संतुष्टि भी प्रदान करते हैं। स्वामी विवेकानन्द कहा करते थे कि ईश्वर मानव में बसता है। उसकी सेवा करोगे तो प्रभु को पा जाओगे। गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है-

**सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।।**

ऐसा भाव रखें कि ईश्वर सबमें है। किसी की सेवा करें तो यह भाव न रखें, कि मैं किसी रोगी की सेवा कर रहा हूँ, बल्कि यह भाव रखें कि इस रोगी में मेरे भगवान् विराजते हैं, मैं भगवान् की सेवा कर रहा हूँ। किसी दरिद्र की सेवा करें तो उसमें भी यही भाव रखें कि मैं इस दरिद्र में जो भगवान् विराजतें हैं, उनकी सेवा कर रहा हूँ। ईसा मसीह प्रार्थना करते थे- हे प्रभु! मुझे अपना माध्यम बनाओ। किसी की मुसीबत को दूर करने के लिए कोशिश करना ईश्वर के निकट जाना है। वह मनुष्यों को विपति से उबारने के लिए समर्थ को माध्यम बनाते हैं। सहायता के लिए पहल करना मनुष्य की सहज प्रवृति है। " God help those, who help Others". अर्थात भगवान् उनकी सहायता करते हैं, जो दूसरों की सहायता करते हैं।

**-अज्ञात**

स्वामी विवेकानन्द की शिष्या भगिनी निवेदिता (मारग्रेट नोबल) मिदनापुर बंगाल में छात्रों के सम्मुख भाषण दे रही थी। उनके भाषण से प्रभावित होकर युवकों ने 'हिप-हिप-हुर्रे' का नारा लगा दिया। यह सुनकर निवेदिता ने कहा-'तुम्हारे अन्दर क्या भारतीय भाषाओं के प्रति सम्मान नहीं है? तुम सब बांग्ला या हिन्दी में उद्घोष क्यों नहीं करते, यदि कहना ही है तो बोलो भारत माता की जय, सच्चिदानन्द परमात्मा की जय।' भगिनी निवेदित के मुख से राष्ट्रभक्ति के यह स्वर सुनकर छात्रों का स्वाभिमान जाग उठा और सभा स्थल भारत माता की जय के जयघोष से आकाश गूंज उठा।

## मैं गीत गा रहा हूँ कुछ गुनगुना रहा हूँ

भारत की नारी के मैं गुणगान गा रहा हूँ
माता यह राम की है और कृष्ण की है जननी
तू भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरू की जननी,
देवी है पूज्या है यह सब को सुना रहा हूँ। मैं गीत .....
वीरों की माता है यह सन्तों की है निर्माता
दुर्गावती भी है यह, झाँसी की रानी भी है
नारी की वीरता की मैं गाथा सुना रहा हूँ। मैं गीत .....
यह त्याग की है देवी श्रद्धा की मूर्ति है
वात्सल्य की है सरिता करुणा की मूर्ति है,
इसके स्नेह और दया का आभार गा रहा हूँ। मैं गीत .....
जाने समय ने क्योंकर बदली हैं सब प्रथाएँ
बेटी, बहिन और माँ को क्यों दुष्ट दें सज़ाएँ
दुष्कर्मों की खबर पर आँसू बहा रहा हूँ, पीड़ा सुना रहा हूँ,
मैं गीत गा रहा हूँ, कुछ गुनगुना रहा हूँ। **-शांति प्रकाश शर्मा**

## सामाजिक समरसता एवं सद्भावना यज्ञ

**भिवानी :** हनुमान गेट स्थित महर्षि वाल्मीकि सेवा बस्ती में सेवा भारती भिवानी द्वारा सामाजिक समरसता एवं सद्भावना-यज्ञ का आयोजन किया गया। आठ केन्द्रों के 80 बच्चे, मातृशक्ति, पुरुषों व बुद्धिजीवियों ने यज्ञ में शिरकत की। यह सद्भावना-यज्ञ समाज की एकता व भाईचारा के लिए आयोजित किया गया। श्री केन्द्रमणी नगर अध्यक्ष ने कहा कि सेवा भारती समाज के अभावग्रस्त कमज़ोर एवं अति पिछड़े वर्गों का उत्थान करना चाहती है तथा शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक समरसता और स्वावलम्बन के कार्यक्रमों के माध्यम से व्यक्ति में गर्व की भावना का निर्माण और गौरवशाली परम्पराओं का विकास करने को लेकर हम कृतसंकल्प हैं। उन्होंने भाईचारा और सामाजिक समरसता पर बल देकर हमें बिरादरियों की सद्भावना का प्रयोग करना चाहिए। बहन लीला शर्मा ने आज के सद्भावना-यज्ञ के महत्त्व पर कहा कि कुछ लोग निहित स्वार्थ के कारण 36 बिरादरी की शान्ति भंग कर वातारण को अपवित्र करना चाहते हैं। सेवा भारती यज्ञ से वातावरण को पवित्र और समाज में एकता, भाईचारा व सद्भावना के लिए अपील करती है। लोग आए दिन निम्न स्तर की अहिष्णुता की चर्चा करते हैं, अभिव्यक्ति के नाम पर राष्ट्र

को खंडित करने की अमर्यादित भाषा को इस्तेमाल कर माँ भारती का अपमान करते हैं। शबरी किसी से ईर्ष्या नहीं करती थी और मन के अन्दर सभी के प्रति सद्भावना रखती थी। सब के प्रति निर्मल भाव था और स्वयं भी निर्मल होकर इतनी पवित्र हो गई कि उसने अपने चरणों से सारे पम्पा सरोवर को पवित्र कर दिया। अगर हमारा भी हृदय शबरी की तरह सेवा के अनन्य भाव से कोमल है, तो हम भी वातावरण को पवित्र कर सकते हैं। अतः हमें समय के अनुसार शिक्षित और संस्कारित बनना ही होगा, इसी में राष्ट्र का कल्याण है। कार्यक्रम के पश्चात प्रसाद वितरण हुआ। इस अवसर पर सर्वश्री राम निवास, मनोहर लाल, लीला शर्मा, सारिका, अनुराधा, देवराज उपस्थित रहे।

-**प्रहलाद राय**, प्रान्त उपाध्यक्ष

## अपनी सेवा भारती हरियाणा प्रदेश का नये नियमों के अनुसार नव पंजीकरण

**DEPARTMENT OF INDUSTRIES & COMMERCE, HARYANA**

Form-VII

"Revised Certificate of Registration issued under Section 9(4) of the Haryana Registration of Societies Act. 2012 upon allotment of a new registration number".

(See sub-rule (2) of rule 8).

**REVISED CERTIFICATE OF REGISTRATION OF SOCIETY.**

I hereby certify that [Sewa Bharti Haryana Pardesh] (name of the Society) registered vide registration number [06-006-2016-06673] on [2016-01-25 07:53:09] Registered with District Registrar has been alloted a new Registration Number as undermentioned on this [25] day [Jan] month [2016] year under the Haryana Registration and Regulation of Societies Act, 2012 (Haryana Act No. 1 of 2012).

State Code : HR, District Code : 006 Year of Registration : 2016
Registration No. 06673 Name of Society : Sewa Bharti Haryana Pardesh
Registration Office Address : Abhimanyu vyayam shala Balmiki Basti,Arjun Gate, Karnal.

Issued under my hand at [Karnal] this [25] day of month [Jan] (Year) [2016] having unique Identification Number - 2001105636

SEAL

Issuing Authority
S/D
District Registrar, Karnal

**कितने पुण्य फल ऐसे हैं, जिनके सत्य परिणाम प्राप्त करने के लिए अगले जन्म की प्रतीक्षा करनी पड़ती है। परन्तु इस लोक साधना का परमार्थ ऐसा है, जिसका प्रतिफल हाथों-हाथ मिलता है। यह सौदा 'नकद-बनकदी है, इस हाथ दे, उस हाथ ले'। किसी दुखी के आंसू पोंछते समय असाधरण आत्मसंतोष होता है। कोई बदला न चुका सके तो भी उपकारी का मन ही मन सम्मान करता है, आशीर्वाद देता है, इसके अतिरिक्त ऐसा दैवीय विधान-जिसके अनुसार उसका भण्डार कभी खाली नहीं होता। उसपर ईश्वरीय अनुग्रह बरसता रहता है और जो खर्चा किया, उसकी भरपाई करता रहता है।**

## समालखा में स्टेशनरी वितरण

26 फरवरी 2016 को श्रीमती शालिनी सिन्हा कार्यपालक विधि इंजीनियरिंग प्रोजेक्टस (इंडिया) लिमिटेड ने अपने पति स्वर्गीय श्री अश्वनी सिन्हा जी की पुण्यतिथि पर सेवा भारती बाल विद्यालय के सभी विद्यार्थियों को नोट बुक, पेन्सिल, रबड़ आदि बांटी। उन्होंने अपने सम्बोधन में सेवा भारती द्वारा किये जा रहे सेवा कार्यों की सराहना की और भविष्य में सहयोग का आश्वासन दिया। इस अवसर पर विद्यालय के बच्चों ने स्वागत गीत, देशभक्ति गीत और माननीय प्रधानमंत्री द्वारा 'बेटी-बचाओ, बेटी पढ़ाओ' पर शानदार प्रस्तुति देकर सभी का मन मोह लिया। मंच संचालन कुरुक्षेत्र विभाग के प्रमुख श्री दयालू अरोड़ा ने किया। नगर अध्यक्ष श्री आनन्द शरण ने सेवा कार्यों की विस्तृत जानकारी दी और बताया कि हम समाज के सहयोग से समाज के लिए समाज उत्थान का कार्य कर रहे हैं। समाजसेवी सक्षम वर्ग सेवा भारती की रीढ़ की हड्डी है। हम इन सहयोगियों के आभारी हैं। श्रीमती किरण शरण, सर्वश्री मदनलाल अरोड़ा, सुभाष मलहोत्रा, गुरुदत्त अनेजा ने श्रीमती शालिनी सिन्हा को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। ज़िला सेवा प्रमुख श्री आदेश त्यागी, नगर सचिव श्री रविन्द्र शर्मा, श्री मनोज जोरासी, श्री अविनाश शर्मा, श्री सुरेन्द्र शर्मा, डॉ. देवेन्द्र मलहोत्रा, श्री सुरेन्द्र चोपड़ा, श्री राघव देसवाल तथा सभी अध्यापिकाएं उपस्थित थीं। प्रसाद वितरण और शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। **-सुभाष देसवाल**

**एक अनुकरणीय स्वयंसेवक का देहावसान :** करनाल में 18 मार्च, 2016 को श्री लेखराज जी 103 वर्ष 3 मास की लम्बी आयु तक एक सफल जीवन जीकर स्वर्ग सिधार गए। वह एक आदर्श मानव, आदर्श स्वयंसेवक, आदर्श पिता, आदर्श पति, आदर्श मित्र और आदर्श नागरिक थे। वे अपने पीछे 7 पुत्र, 2 पुत्रियों के भरे-पूरे परिवार में पोते-पोतियों, पड़पौते-पड़पौतियों का संघ परिवार और सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं। उनकी रस्म पगड़ी मंगलवार 22 मार्च 2016 को डेरा कारसेवा में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर अनेक लोगों के अतिरिक्त विभाग प्रचारक श्री नरेन्द्र जी ने श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि उनके अनुकरणीय जीवन से प्रेरणा लेकर अपने को उनके दिखाए मार्ग पर आगे बढ़ने में सक्रिय सहयोग करना चाहिए।

**-ओमप्रकाश वर्मा**

## 13वीं किस्त : आपात्काल में एक स्वयंसेवक का संघर्ष

*तानाशाही की कालरात्रि में, जिन्होंने झेले कष्ट महान,*
*तूफानों से टकराए थे वे, बनकर हिमगिरि सी चट्टान।*

भारत के इतिहास में 25-26 जून 1975 की अर्धरात्रि से 21 मार्च 1977 तक ऐसा कलंकपूर्ण घटनाक्रम है, जिसके स्मरण मात्र से भारत की आत्मा युग-युगान्तर तक सन्तप्त रहेगी। उस काल में तानाशाही के उन्माद में निर्दयता और यातनाओं के जितने स्वरूप हो सकते हैं, इन्दिरा गाँधी के प्रति अपनी वफ़ादारी सिद्ध करने या फिर क्षुद्र स्वार्थपूर्ति हेतु कुछ कर्मचारियों ने तथा कांग्रेस जनों ने निर्लज्जता की चरम सीमा दिखा दी थी। राजनैतिक बन्दियों को पुलिस द्वारा लात-घूंसों और डण्डों से पीटने, नग्न शरीर पर कोड़े बरसाने, पेड़ पर उल्टा लटकाकर बेंतों से पिटाई, बिजली के झटके देने, प्लास से नाखून उखाड़ने, पानी की जगह पेशाब पिलाने, गुदा द्वार में मिर्चों का चूर्ण डालने, कपड़ों के अन्दर चूहे छोड़ने तक जैसे अप्राकृतिक और पैशाचिक कृत्य किए गए। यह सब कुकृत्य लगभग सात मास तक भूमिगत गतिविधियों के दौरान मैं आँखों से देख और कानों से सुन चुका था। उस समय हरियाणा में श्रीमती इन्दिरा गाँधी का विशिष्ठ वफादार (चमचा) चौ॰ बंसीलाल मुख्यमन्त्री था, जिसके जुल्मों के चर्चे सारे देश में थे, उसी समय श्री पुरुषोत्तम जी देशमुख भारतीय जनसंघ प्रदेश महामन्त्री ने मुझे सूचना दी थी -(इसकी चर्चा पिछले अंक में मैंने की थी) कि मुझे अनुमति मिल गई है कि मैं अपना जत्था तैयार करके 13 जनवरी, 1976 को, जिस दिन हरियाणा विधान सभा का शीत-सत्र शुरू होना था, विधान सभा पर सत्याग्रह करूँ। उस समय मैंने पलट कर कहा था, देशमुख जी ! मैं तो करनाल में सत्याग्रह करुँगा, चण्डीगढ़ में वन्सीलाल से क्यों मरवाते हो? देशमुख जी ने कहा था यही आज्ञा हुई है। खैर .....उसी दिन से मैंने अपना जत्था तैयार करना शुरू कर दिया। भूमिगत रहकर मैं यह कार्य रात्रि 9 बजे से 11 बजे तक करता था। जितने भी प्रमुख कार्यकर्ता और नेता थे उनसे मैंने सम्पर्क किया। 23 लोगों ने हामी भरी। 10 जनवरी से उन्हें समय व स्थान की सूचना देनी शुरू कर दी-कि कहाँ से चलकर कहाँ पहुँचना है, और कैसे सत्याग्रह करना है। उसी दिन से लोगों ने अपनी समस्याएँ भी बतानी शुरू कर दी। 13 जनवरी मूसलाधार वर्षा हो रही थी। गाँव झंझाड़ी जी॰ टी॰ रोड से बस से हमें चण्डीगढ़ के लिए सवार होना था। वर्षा नहीं रुक रही थी, हम केवल तीन लोग ही लगभग 1 बजे दोपहर को सवार हो सके, चण्डीगढ़ शाम तक पहुँचे, इसलिए 13 की बजाए 14 जनवरी को सत्याग्रह करने का फैसला हुआ। उन दिनों हमें जब भी चण्डीगढ़ में रात्रि

को रहना होता था तो 21 सैक्टर में एक कैमिस्ट थे हमारे मित्र, उनके मकान में हमारे लिए अनैक्सी वाला कमरा तैयार रहता था, उस दिन भी हमने रात वहीं गुज़ारी। दूसरे दिन दोपहर 12½ बजे हम तीन ओम प्रकाश, श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा तथा गुलशन कुमार भाटिया विधान सभा के गेट नं॰ 1 पर पहुँच गए, ठीक 1 बजे हमने आपात्काल के विरुद्ध, छपे हुए इश्तहार बाँटने और नारे लगाने शुरू कर दिए। 10-15 मिनट के अन्दर ही हज़ारों लोग छत्तों पर वरांडों में सड़कों पर उस नज़ारे को देखने के लिए इकट्ठे हो गए। कई ऐसे भी थे, जो हमारे पास आकर इश्तहार लेते और कान में आहिस्ता से शाबाश! बोलकर चले जाते। उस समय अनेक विधायक मन्त्री और सरकारी कर्मचारी यह नज़ारा देखकर अजीब सी मुस्कराहट के साथ विधानसभा भवन में घुस जाते। हम नारे लगा रहे थे-'भारत माता की जय, गूंजे धरती और आकाश, देश का नेता जय प्रकाश, यह है जय प्रकाश की आँधी, क्या करेगी इन्दिरा गाँधी, तानाशाही हटाओ, लोकतन्त्र बहाल करो, इन्दिरा गाँधी की तानाशाही नहीं चलेगी, नहीं चलेगी।' उस नज़ारे को देखकर अनेक लोगों ने आपात्काल के समाप्त होने के बाद आकर चर्चा की थी। उल्लेखनीय जो बात सामने आई, -उस दिन श्रीमती चन्द्रावती जो उस समय विधायक थी, ने भी उस सत्याग्रह को देखा था, उसने भिवानी के न्यायालय परिसर में वकीलों के बीच चर्चा की थी, 'कि 14 जनवरी को तीन नौजवानों ने ऐसा नज़ारा पेश कर दिया, मैं सोचती हूँ कि अंग्रेज़ों के ज़माने में भी ऐसे ही नौजवान सिर पर कफ़न बांधकर निकलते होंगे'। आपात्काल में संघर्ष पर अनेक पुस्तकों में इस सत्याग्रह का उल्लेख किया गया था। 'तानाशाही से जूझता हरियाणा' पुस्तक में पृष्ठ 47 पर इस घटना का उल्लेख इस प्रकार है- 'कहा जाता है, कि इतिहास अपने को दोहराता है, इस उक्ति को चण्डीगढ़ में हरियाणा विधान सभा पर श्री ओमप्रकाश अत्रेजा ने अपने साथियों-श्री गुलशन भाटिया तथा श्री राजेन्द्र कुमार सहित सत्य कर दिखाया, जब उन्होंने 14 जनवरी के दिन तानाशाही विरोधी नारे लगाये, पर्चे फैंके तथा जनधारणा के दिलों की आवाज़ को चापलूसी, चाटुकारिता के आधार पर बने पंगू मन्त्रियों तथा मुख्यमन्त्री के सामने सत्याग्रह करके बुलन्द कर दिया था। उस समय वहाँ पर वैसा ही सन्नाटा पैदा हो गया था, जैसा एक दिन भगत सिंह के असैम्बली हाल में बम्ब फैंके जाने पर हुआ होगा। उस भगत सिंह की परिणति से आज का भगत सिंह अपरिचित नहीं था, पर अपना सिर हथेली पर लेकर ही सदा देशभक्त अपने रास्ते पर बढ़ा करते हैं।'

*अगले अंक में जारी .....*

सेवा दर्शन से प्रभु पूजा द्विमासिक पत्रिका, स्वामित्व- सेवा भारती (पंजी.) हरियाणा।
मुद्रक : जुगल बठला, मै. बठला प्रिंटर्ज़, विवेकानन्द विद्यालय परिसर, करनाल।
सम्पादक व प्रकाशक : ओम प्रकाश अत्रेजा, ई. 230, अर्जुन गेट, करनाल-132001